(iii) सामाजिक संघर्ष तथा तनाव :—
सामाजिक परिवर्तन का एक स्पष्ट हानिकारक प्रभाव सामाजिक संघर्ष तथा सामाजिक तनाव में वृद्धि हुई है। इन बदले हुए सामाजिक हालतों में सामाजिक मूल्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति में स्पर्द्धा काफी बढ़ गयी है। अधिकांश लोग अपने-अपने मूल्यों को महत्त्वपूर्ण समझकर उसपर अधिक बल डालने लगे हैं तथा दूसरों की मूल्यों के अवहेलना करना प्रारंभ कर दिये हैं। परिणामतः दफ्तर हो या उद्योग, सभी जगह सामाजिक संघर्ष एवं तनाव का दबदबा बढ़ गया है। लोगों पर पुराने मूल्यों एवं धर्मों का नियंत्रण हट गया है। महिलाओं में आर्थिक स्वतंत्रता पनप जाने से वे पुरुषों के अधीनस्थ के रूप में कार्य करने में उन्हें ठेस पहुँचता है। इन सबका नतीजा सामाजिक संघर्ष तथा तनाव है जिससे पूरा समाज आज परेशान है।

(2) लाभदायक प्रभाव :— सामाजिक परिवर्तन के जहाँ एक ओर हानिकारक प्रभाव उत्पन्न हुए हैं वहीं उसके कुछ लाभदायक प्रभाव भी हैं, जो निम्न हैं :—

(i) सामाजिक कुरीतियों से छुटकारा :— सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रमुख एवं लाभदायक प्रभाव सामाजिक कुरीतियों को

समाज से निकल फेंकना है। सामाजिक परिवर्तन हो जाने से अधिकांशतः बुराइयाँ हट जाती हैं। यह सामाजिक परिवर्तन का ही प्रभाव है। भारतीय समाज से सती प्रथा, छुआछूत, बाल-विवाह जैसी सामाजिक बुराइयाँ दूर हो गयी और समाज पुनर्संगठित हो सका।

(ii) महिलाओं का सामाजिक स्थान में सुधार:- आज तमाम संसार में महिलाओं की सामाजिक जीवन में पहले की तुलना में काफी उन्नति हुई है। कारण महिलाओं से संबंधित सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन का होना है। पहले के समाज में महिलाओं का घर का काम-काज करने, पुरुषों का मन बहलाने एवं बच्चा पैदा करने का माल एक तंत्र के रूप में समझा जाता है। परंतु सामाजिक परिवर्तन होने से महिलाओं से संबंधित मूल्यों तथा मानकों में काफी परिवर्तन आ गया है। फलतः अब महिलाओं को पुरुषों के समान हर क्षेत्र एवं कार्य के लिए योग्य समझा जाने लगा है। आज महिला पुलिस विभाग का दायित्व भी सँभाल रही हैं तथा पर्वतारोही समूह की सक्रिय सदस्या भी बनी हुई हैं। कार-दौड़ तथा साइकिल दौड़ (Car race & bicycle race) में महिलाएँ पुरुषों को पछाड़

रही हैं। इन बातों को पहले के समाज में सोचना तक पाप समझा जाता था। इसी प्रकार से पहले महिलाओं को घूँघट में रखना, घर के चौखट (दरवाजा) से पार नहीं करना आदि प्रतिबंध था। स्पष्ट हुआ कि सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं के सामाजिक स्तर में काफी सुधार आ गया है। श्रीनिवासन (Shri Nivasan, 1975) के अनुसार, आधुनिक सामाजिक परिवर्तन ने महिलाओं को पुरुषों से भी आगे आने की चेतना का सजग बना दिया है।

(iii) पददलितों में सामाजिक चेतना :- सामाजिक परिवर्तन का एक लाभदायक भाव यह हुआ है कि पददलितों में अपने अधिकारों के प्रति एक नयी सामाजिक चेतना उत्पन्न हो गयी है। वे पहले अपने को नीचा, टुटा हुआ एवं ईश्वरीय श्राप से युक्त मानते थे। यहाँ तक कि वे मंदिरों में प्रवेश के लायक भी अपने को नहीं मानते थे। परंतु सामाजिक परिवर्तन हो जाने से उनके सामाजिक मूल्यों एवं विश्वासों में काफी परिवर्तन हो गया है। वे अपने अधिकारों के प्रति चेतनशील हो गये हैं तथा उनमें आर्थिक सम्पन्नता में वृद्धि हो जाने से पुराने सामाजिक विश्वास टूट गये हैं और उनकी जगह पर नये-नये सामाजिक विश्वास उत्पन्न हो गए हैं।